कक्षा-6
हिन्दी - बाल रामकथा
सीता की खोज
(अनुखंड-1)

प्रस्तुतकर्ता : चेतराम वर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-4,मुंबई

सीता की खोज

राम के मन में कई प्रकार के प्रश्न थे । आशंकाएँ थीं । मारीच की माया उन्होंने देख ली थी । वह छल से उन्हें कुटिया से दूर ले आया था । “अब क्या होगा?” यँही सोचते हुए वे कुटिया की ओर भागे चले जा रहे थे । वापसी मैं एक पल भी विलंब नहीं करना चाहते थे । सीता की रखवाली के लिए लक्ष्मण को वे कुटी पर छोड़ आए थे । “अच्छा हो कि मारीच की मायावी आवाज़ उन तक नहीं पहुँची हो और लक्ष्मण वहीं हों ।” राम ने सोचा । “सीता अकेली रहीं तो राक्षस उन्हें मार डालेंगे । खा जाएँगे ।”

सीता की खोज

तभी उन्होंने पगडंडी से लक्ष्मण को आते देखा । वही हुआ, जिसका राम को डर था । अनिष्ट की आशंका और बढ़ गई । पता नहीं सीता किस हाल में होंगी । राक्षसों ने उन्हें मार डाला होगा? उठा ले गए होंगे ? अकेली सीता दुष्ट राक्षसों के सामने क्या कर पाई होंगी । कुटी छोड़कर आने पर वह लक्ष्मण से क्रुद्ध थे । उन्होंने क्रोध पर नियंत्रण रखा । लक्ष्मण का बायाँ हाथ जोर से पकड़ लिया। डर ने दोनों भाइयों को घेर लिया था ।

सीता की खोज

“देवी सीता ने मुझे विवश कर दिया, भ्राते ! उनके कटु वचन मैं सहन नहीं कर सका । कटाक्ष और उलाहना नहीं सुन सका । मैं जानता था कि आप सकुशल होंगे । आप की सुरक्षा को लेकर मन में कोई संदेह नहीं था । तब भी मुझे कुटिया छोड़कर आना पड़ा,” लक्ष्मण ने कहा ।

“यह तुमने अच्छा नहीं किया । तुम्हें मेरी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए था । अब जल्दी चलो । मेरा मन चिंतित है । सीता न जाने किस हाल में और कैसी होंगी । मायावी राक्षसों का कोई ठिकाना नहीं ।” राम ने चलने की गति और बढ़ा दी ।

सीता की खोज

कुटिया अभी कुछ दूर थी । पर दिखाई पड़ने लगी थी । राम ने वहीं से पुकारा, “सीते ! तुम कहाँ हो?” जैसे कि उन्हें पता चल गया हो कि सीता आश्रम में नहीं है । कुटिया मौन रही । वहाँ से कोई उत्तर नहीं मिला । राम की बेचैनी बढ़ गई । उनकी एक आवाज़ पर कहीं से भी उपस्थित हो जाने वाली सीता वहाँ नहीं थी । अनुपस्थिति बोलती कैसे?

सीता की खोज

राम की आवाज पेड़ों से टकराकर हवा में विलीन हो गई । कुटिया के सून्य में समा गई । राम पुकारते रहे । उत्तर में उन्हें हर बार सन्नाटा ही मिला । चुप्पी हर ओर थी । हर दिन हवा में झूलने वाले पत्ते शांत थे । लताएँ गुमसुम पड़ी हुई थीं । चिड़ियों की चहक लुप्त थी । कुटिया के निकट घूमने वाले पशु-पक्षी चुप खड़े थे । सब स्तब्ध !

सीता की खोज

राम भागते हुए आश्रम पहुँचे । कुटिया में जाकर देखा । “सीते ! सीते !” पुकारते हुए उन्होंने आसपास की हर जगह देखी । पेड़ों-झाड़ियों के पीछे गए । उन स्थानों की ओर भागे, जहाँ सीता जा सकती थीं। सीता का कहीं पता न था । शोक से व्याकुल राम रोने लगे । सीता का बिछुड़ना उनके लिए असहनीय आघात था । वे सुध-बुध भुला बैठे ।

सीता की खोज

विरह में वे गोदावरी नदी के पास गए । उससे पूछा, “तुमने सीता को कहीं देखा है ?” नदी ने कोई उत्तर नहीं दिया । वे पंचवटी में एक-एक वृक्ष के पास गए। सबसे पूछा । कोई सीता का पता बता दे । हाथी के पास गए । शेर से पूछा । फूलों के पास रुके । चट्टानों, पत्थरों से प्रश्न किया । शोक संतप्त राम भूल गए कि चट्टानें नहीं बोलतीं । पेड़-पौधे बात नहीं करते । उनकी भाषा मौन है । उनके उत्तर भी मौन ही हैं ।

सीता की खोज

राम की मानसिक स्थिति विक्षिप्त जैसी थी । एक बार उन्हें लगा कि सीता वहीं कुटिया के पास है । अभी भागकर उन्हें खिझाने के लिए पेड़ के पीछे छिप गई है । “मेरे साथ परिहास मत करो, सीते !” राम उस पेड़ की ओर दौड़ पड़े । वहाँ कोई नहीं था । वे निराश होकर पेड़ के नीचे बैठ गए ।

सीता की खोज

शब्दार्थ

विलंब	= देरी
कुटी	= कुटिया
अनिष्ट	= बुरा
क्रुद्ध	= क्रोधित
कटु	= कड़वे
कटाक्ष	= व्यंग
मौन	= चुपचाप
विलीन	= गायब
स्तब्ध	= सुन्न, बिना हलचल
संतप्त	= उदास
विक्षिप्त	= पागल
परिहास	= मज़ाक

सीता की खोज

अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न-1 राम को छल से कुटिया से दूर कौन लेकर गया?
प्रश्न-2 राम कुटिया वापस आते हुए क्या सोच रहे थे?
प्रश्न-3 राम सीता के लिए क्यों चिंतित हो रहे थे?
प्रश्न-4 राम लक्ष्मण से क्यों क्रोधित थे?
प्रश्न-5 विरह में राम ने सीता का पता किस-किस से पूछा?
प्रश्न-6 राम की मानसिक स्थिति कैसी हो गयी थी?